International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 1.982| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 2, Issue 4, July-August 2015 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2015.0204018

धर्म एवं राजनीति के बीच संबंध: भारतीय संदर्भ में विवेचनात्मक अध्ययन

Dr. Sucheta Gupta

Lecturer, Department of Political Science, Government College Bibirani, (Alwar) Rajasthan, India

शोध सार: धर्म और राजनीति मानव समाज के दो अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली घटक हैं, जो इतिहास के आरंभ से ही एक-दूसरे को प्रभावित करते आए हैं। भारत जैसे बहुधार्मिक देश में धर्म सामाजिक पहचान, मूल्य-व्यवस्था और सांस्कृतिक परंपराओं को निर्धारित करता है, जबकि राजनीति सत्ता के वितरण, नीतियों के निर्माण और सामाजिक न्याय की दिशा तय करती है। अनेक बार धर्म का उपयोग राजनीतिक उद्देश्यों के लिए किया जाता है, और राजनीति धर्म के संगठनात्मक स्वरूप को प्रभावित करती है। यह परस्पर संबंध समाज में सकारात्मक परिवर्तन भी ला सकता है और संघर्षों व विभाजन को भी जन्म दे सकता है।

धर्म राजनीति को नैतिक दिशा, मूल्य और सामाजिक एकता प्रदान कर सकता है, वहीं दूसरी ओर राजनीति धार्मिक भावनाओं का दुरुपयोग कर जनमत को प्रभावित कर सकती है। भारत में धर्मनिरपेक्षता (Secularism) का सिद्धांत इस संबंध को संतुलित करने का प्रयास करता है, जहाँ राज्य किसी धर्म विशेष का पक्ष नहीं लेता, बल्कि सभी धर्मों के प्रति समान दूरी और समान सम्मान की नीति अपनाता है।

यह शोध धर्म और राजनीति के ऐतिहासिक, दार्शनिक तथा सामाजिक संबंधों का विश्लेषण करते हुए यह समझने का प्रयास करता है कि इन दोनों के बीच संतुलन किस प्रकार बनाए रखा जा सकता है, ताकि लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया जा सके। अध्ययन का निष्कर्ष यह बताता है कि धर्म और राजनीति का संबंध अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ है, परंतु इसे सकारात्मक एवं जिम्मेदार दिशा में मोड़ने की आवश्यकता है।

मूल शब्द : धर्म, राजनीति, धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक सद्भाव, मूल्य-व्यवस्था, सांस्कृतिक पहचान, नैतिकता, लोकतंत्र, जनमत, राष्ट्रीय एकता।

I. परिचयात्मक

धर्म और राजनीति मानव सभ्यता के दो ऐसे स्तंभ हैं जिनका प्रभाव समाज के निर्माण, विकास और संचालन में अत्यंत गहरा रहा है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक धर्म और राजनीति ने एक-दूसरे को प्रभावित किया है तथा समाज की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। धर्म जहाँ व्यक्ति के नैतिक आचरण, जीवन-मूल्यों और सांस्कृतिक परंपराओं को निर्धारित करता है, वहीं राजनीति सत्ता के संगठन, सामाजिक न्याय, कानून-व्यवस्था और सामूहिक निर्णय प्रक्रिया को संचालित करती है। इन दोनों क्षेत्रों का परस्पर जुड़ाव केवल सामाजिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि दार्शनिक और ऐतिहासिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भारत जैसे बहुधार्मिक और बहुसांस्कृतिक देश में धर्म और राजनीति का संबंध विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है। यहाँ हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध समेत कई धार्मिक परंपराएँ एक साथ अस्तित्व में हैं। इन विविध धार्मिक समुदायों का सामाजिक व्यवहार, सांस्कृतिक पहचान और राजनैतिक रुझान समाज की संरचना पर सीधा प्रभाव डालते हैं। भारत के संविधान ने इस विविधता को ध्यान में रखते हुए धर्मनिरपेक्षता का सिद्धांत अपनाया, जिसके अनुसार राज्य किसी धर्म का पक्ष नहीं लेता, बल्कि सभी धर्मों को समान सम्मान प्रदान करता है। यह सिद्धांत राजनीतिक व्यवस्था और धार्मिक स्वतंत्रता के बीच संतुलन बनाए रखने का प्रयास करता है।

धर्म राजनीति को नैतिक दिशा प्रदान कर सकता है, क्योंकि धर्म व्यक्ति को न्याय, करुणा, सत्य, त्याग और समानता जैसे मूल्यों की शिक्षा देता है। यदि राजनीतिक नेता इन नैतिक मूल्यों के आधार पर निर्णय लें, तो समाज में पारदर्शिता, ईमानदारी और उत्तरदायित्व बढ़ सकता है। इसी प्रकार धर्म समाज में एकता, सहयोग और सामाजिक सद्भाव को भी बढ़ावा देता है। दूसरी ओर, राजनीति भी कई बार धर्म को संगठित, मजबूत और संरक्षित करने में योगदान दे सकती है। कानूनों, नीतियों और योजनाओं के माध्यम से राज्य धार्मिक संस्थाओं और समुदायों के हितों की रक्षा करता है।

हालाँकि, धर्म और राजनीति का संबंध केवल सकारात्मक पक्ष तक सीमित नहीं है। इतिहास साक्षी है कि जब राजनीति में धार्मिक भावनाओं का अनियंत्रित उपयोग किया गया, तब समाज में संघर्ष, विभाजन और साम्प्रदायिक हिंसा जैसी समस्याएँ उत्पन्न हुईं। धर्म का

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 1.982| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 2, Issue 4, July-August 2015 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2015.0204018

राजनीतिकरण अक्सर जनमत को प्रभावित करने, वोट बैंक बनाने और सत्ता प्राप्त करने के साधन के रूप में किया जाता है। इससे लोकतांत्रिक व्यवस्था कमजोर होती है और समाज में अविश्वास तथा तनाव बढ़ता है। चुनावी राजनीति में धार्मिक ध्रुवीकरण, नफरत भरे भाषण और धार्मिक प्रतीकों का उपयोग इस प्रवृत्ति की प्रमुख उदाहरण हैं।

इसके बावजूद यह तथ्य भी स्वीकार करना पड़ता है कि धर्म और राजनीति को पूरी तरह अलग नहीं किया जा सकता। भारतीय समाज के सांस्कृतिक ढाँचे, पारिवारिक मूल्यों और सामाजिक जीवन में धर्म इतना गहराई से रचा-बसा है कि प्राकृतिक रूप से यह राजनीति को प्रभावित करता है। यही कारण है कि राजनीतिक निर्णय कई बार धार्मिक संवेदनाओं को ध्यान में रखकर लिए जाते हैं। इसी प्रकार धार्मिक नेता भी कई बार सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

आज के वैश्विक और तकनीकी युग में यह आवश्यक है कि धर्म और राजनीति का संबंध संतुलित, संवैधानिक और मानवतावादी सिद्धांतों पर आधारित हो। राज्य को धर्म के प्रति न तो अत्यधिक निकटता रखनी चाहिए और न ही पूर्णत: दूरी बनानी चाहिए। धर्मनिरपेक्षता, समानता, धार्मिक स्वतंत्रता और सामाजिक सद्भाव के आधार पर ही इस संबंध को सकारात्मक दिशा दी जा सकती है। नागरिकों, राजनीतिक नेताओं और धार्मिक संस्थाओं की संयुक्त जिम्मेदारी है कि वे धर्म का उपयोग सामाजिक कल्याण और राष्ट्रीय एकता के लिए करें, न कि सामाजिक विभाजन या राजनीतिक लाभ के लिए। इस प्रकार, धर्म और राजनीति का संबंध जटिल होते हुए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसे समझना, विश्लेषित करना और संतुलित बनाए रखना लोकतांत्रिक भारत की स्थिरता के लिए अनिवार्य है।

II. अवधारणात्मक विवेचन

धर्म और राजनीति, मानव समाज के दो अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व हैं, जो अलग-अलग क्षेत्रों से संबंधित होते हुए भी व्यक्ति तथा समाज के निर्माण, विकास और दिशा निर्धारण में गहरा प्रभाव डालते हैं। "धर्म" शब्द का मूल संस्कृत धातु “धृ” से माना जाता है, जिसका अर्थ है—धारण करना, बनाए रखना, या जीवन को सही पथ पर स्थापित करना। भारतीय दर्शन में धर्म केवल धार्मिक मान्यताओं तक सीमित नहीं है; यह सत्य, नैतिकता, कर्तव्य, आचरण, न्याय और सामाजिक व्यवस्था को भी समाहित करता है। प्राचीन ग्रंथों में धर्म को वह शक्ति माना गया है जो समाज, परिवार और व्यक्ति के जीवन को संतुलित रूप से संचालित करता है। धर्म व्यक्ति को उसके कर्तव्यों का बोध कराता है और यह बताता है कि कौन सा आचरण उचित है और कौन सा अनुचित।

धर्म का अर्थ संकीर्ण धार्मिक अनुष्ठानों, पूजा-पाठ या किसी विशिष्ट संप्रदाय तक सीमित नहीं है। यह व्यक्ति की नैतिक चेतना, आध्यात्मिक दृष्टि और सामाजिक जिम्मेदारी का भी मार्गदर्शन करता है। महर्षि मनु, महाभारत, उपनिषद और बुद्ध धर्म के उपदेशों में धर्म को जीवन के बहुआयामी सिद्धांत के रूप में परिभाषित किया गया है। धर्म व्यक्ति को सत्य, अहिंसा, करुणा, दया, कर्तव्य, सम्मान और सद्भाव की ओर प्रेरित करता है। इस प्रकार धर्म जीवन का वह आधार है जो मानव समाज को नैतिक दिशा प्रदान करता है।

दूसरी ओर "राजनीति" का शाब्दिक अर्थ है—राज (शासन) चलाने की नीति या नियम। यह शब्द प्राचीन भारतीय राजनीति के महान ग्रंथ “अर्थशास्त्र” और “शांति पर्व” से भी जुड़ा है, जहाँ राजनीति को राज्य संचालन, नीतियों के निर्माण, न्याय व्यवस्था, सार्वजनिक कल्याण और शक्ति के संतुलन का विज्ञान कहा गया है। राजनीति का उद्देश्य केवल शासन करना नहीं, बल्कि समाज में सुरक्षा, न्याय, व्यवस्था, विकास और नागरिक अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित करना है। आधुनिक संदर्भ में राजनीति सत्ता प्राप्त करने और उसका उपयोग करने की प्रक्रिया को भी शामिल करती है। राजनीतिक संस्थाएँ, नेता, दल और नीतियाँ समाज के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं।

राजनीति नीतियों के निर्माण, संसाधनों के वितरण, राष्ट्र के विकास और जनता की समस्याओं के समाधान से जुड़ी होती है। यह राज्य और नागरिकों के बीच संबंध स्थापित करती है तथा सामूहिक निर्णय लेने की प्रक्रिया को संचालित करती है। राजनीति की सही दिशा समाज को प्रगति की ओर ले जाती है और गलत दिशा समाज में संघर्ष, भ्रष्टाचार और असंतुलन उत्पन्न कर सकती है।

इस प्रकार धर्म और राजनीति दोनों के अर्थ व्यापक हैं। धर्म जहाँ व्यक्तिगत तथा सामूहिक नैतिकता को परिभाषित करता है, वहीं राजनीति समाज के संगठन, शासन व्यवस्था और नेतृत्व को दिशा प्रदान करती है। दोनों का प्रभाव व्यक्तिगत जीवन से लेकर राष्ट्रीय जीवन तक व्यापक रूप से दिखाई देता है। इसलिए धर्म और राजनीति के अर्थ को समझना इनके संबंध को समझने की पहली आवश्यक शर्त है।

III. धर्म और राजनीति का संबंध

धर्म और राजनीति का संबंध अत्यंत प्राचीन, जटिल और बहुआयामी रहा है। इतिहास के प्रारंभिक काल से ही धर्म और राजनीति ने एक-दूसरे को प्रभावित किया है तथा समाज की दिशा निर्धारित की है। धर्म व्यक्ति को आदर्श, नैतिक मूल्य और कर्तव्य का बोध कराता है,

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 1.982| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 2, Issue 4, July-August 2015 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2015.0204018

जबकि राजनीति समाज के संगठन, शासन और न्याय व्यवस्था का संचालन करती है। दोनों का उद्देश्य सामाजिक जीवन को सुव्यवस्थित बनाना है, परंतु उनके कार्यक्षेत्र अलग होते हुए भी कई बिंदुओं पर एक-दूसरे से मिलते हैं।

सभ्यताओं के इतिहास में धर्म ने राजनीतिक सत्ता के गठन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्राचीन भारत में राजा को "धर्मराज" कहा जाता था, जो धर्म के आधार पर राज्य का संचालन करता था। धर्मशास्त्रों में स्पष्ट लिखा है कि राजा का प्रमुख कर्तव्य प्रजा की रक्षा, न्याय प्रदान करना और धर्म की स्थापना करना है। इस प्रकार, धर्म राजनीति को नैतिक दिशा प्रदान करता है और राजनीति के लिए मूलभूत मूल्य निर्धारित करता है।

दूसरी ओर, राजनीति भी कई बार धर्म को संरक्षित करने और बढ़ावा देने में भूमिका निभाती है। राजनीतिक नीतियाँ अक्सर धार्मिक संस्थाओं, त्योहारों, परंपराओं और समुदायों पर प्रभाव डालती हैं। कई राष्ट्रों की पहचान उनके धार्मिक मूल्यों से निर्मित हुई है। धर्म राजनीति को सामाजिक स्थिरता और नैतिक प्रेरणा प्रदान करता है, जबकि राजनीति समाज में धार्मिक सद्भाव और समानता सुनिश्चित कर सकती है।

हालाँकि, धर्म और राजनीति का यह संबंध हमेशा सकारात्मक नहीं रहा है। जब राजनीति धार्मिक भावनाओं का उपयोग सत्ता प्राप्त करने के साधन के रूप में करती है, तब यह संबंध खतरनाक रूप ले लेता है। धार्मिक आधार पर वोट बैंक बनाना, धार्मिक ध्रुवीकरण, साम्प्रदायिक तनाव, दंगे और सामाजिक विभाजन इसका परिणाम बन सकते हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि धर्म का राजनीतिकरण समाज में गंभीर संघर्ष पैदा करता है।

फिर भी, धर्म और राजनीति को पूरी तरह अलग करना भी संभव नहीं है, विशेषकर भारत जैसे समाज में जहाँ धार्मिक मूल्य लोगों के सामाजिक और राजनीतिक व्यवहार को प्रभावित करते हैं। लोकतांत्रिक प्रणाली में आवश्यक है कि राजनीति धर्म को नैतिक दिशा के रूप में स्वीकार करे, परंतु धर्म का उपयोग राजनीतिक लाभ के लिए न किया जाए। भारत की धर्मनिरपेक्षता (Secularism) इसी संतुलन को स्थापित करने का प्रयास करती है—जहाँ राज्य सभी धर्मों के प्रति समान सम्मान और समान दूरी बनाए रखता है।

अतः धर्म और राजनीति के बीच संबंध न तो पूर्णतः अलग है और न ही पूर्णतः एकीकृत। यह संतुलन, संवैधानिक सिद्धांतों, सामाजिक मूल्यों और नेतृत्व की नैतिकता पर निर्भर करता है। जब यह संबंध संतुलित होता है तो समाज में शांति, सद्भाव और विकास स्थापित होता है; और जब असंतुलित होता है तो संघर्ष, असमानता और विभाजन उत्पन्न होते हैं।

IV. धर्म का राजनीति पर नैतिक प्रभाव

धर्म राजनीति को नैतिक दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। धर्म सत्य, अहिंसा, सेवा, करुणा, समानता और न्याय जैसे मूल्यों पर आधारित होता है, जो किसी भी सक्षम और आदर्श शासन व्यवस्था की नींव बन सकते हैं। जब राजनीतिक नेता नैतिक मूल्यों को अपने निर्णयों में शामिल करते हैं, तब नीतियाँ जनता के हित में बनती हैं और शासन अधिक पारदर्शी, जवाबदेह एवं नैतिक बनता है। धर्म का नैतिक प्रभाव राजनीति में भ्रष्टाचार, सत्ता के दुरुपयोग, हिंसा और अन्याय जैसी प्रवृत्तियों को कम कर सकता है। इसलिए यह कहा जाता है कि एक आदर्श राजनीतिक व्यवस्था वही है जो अपने निर्णयों और नीतियों में नैतिकता को स्थान देती है।

धर्म समाज में एकता, सामूहिक पहचान और सामाजिक चेतना को मजबूत बनाता है। राजनीति अक्सर इन भावनाओं का उपयोग अपने उद्देश्यों के लिए करती है। राजनीतिक दल धार्मिक प्रतीकों, त्योहारों और परंपराओं को जनसंपर्क के साधन के रूप में इस्तेमाल करते हैं। यदि यह उपयोग सद्भाव और सामाजिक मूल्यों के प्रसार के लिए हो तो इसका प्रभाव सकारात्मक होता है, लेकिन यदि इसका उपयोग मतभेद पैदा करने, ध्रुवीकरण बढ़ाने या वोट बैंक बनाने के लिए किया जाए तो इसका प्रभाव नकारात्मक हो सकता है। इस प्रकार धर्म का सामाजिक प्रभाव राजनीति द्वारा उपयोग या दुरुपयोग दोनों रूपों में दिखाई देता है।

भारतीय धर्मनिरपेक्षता का मॉडल पश्चिमी देशों से भिन्न है। भारत में राज्य किसी भी धर्म का विरोध नहीं करता और न ही किसी धर्म का पक्ष लेता है, बल्कि सभी धर्मों के प्रति समान सम्मान और समान दूरी की नीति अपनाता है। भारत में राज्य परंपरागत धार्मिक संस्थाओं के आंतरिक सुधार में भी हस्तक्षेप कर सकता है—जैसे सती प्रथा का उन्मूलन, धार्मिक भेदभाव पर रोक, और तीन तलाक समाप्ति कानून। भारतीय धर्मनिरपेक्षता न्याय और समानता पर आधारित है और यह सुनिश्चित करती है कि धर्म और राजनीति के बीच संतुलन बना रहे।

जब राजनीति धर्म का उपयोग सत्ता प्राप्त करने या जनमत प्रभावित करने के लिए करती है, तो कई गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं। धार्मिक पहचान के आधार पर वोट बैंक बनाना, चुनावों में धार्मिक नारे, धार्मिक ध्रुवीकरण और साम्प्रदायिक तनाव—ये सभी धर्म के राजनीतिकरण के परिणाम हैं। इससे समाज में अविश्वास, विभाजन और हिंसा फैलती है, जो लोकतांत्रिक मूल्यों को कमजोर करती है।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 1.982| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 2, Issue 4, July-August 2015 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2015.0204018

धर्म के राजनीतिकरण से जनता की वास्तविक समस्याएँ, जैसे गरीबी, बेरोजगारी और शिक्षा, पीछे छूट जाती हैं और राजनीतिक विमर्श भावनात्मक मुद्दों पर केंद्रित हो जाता है। यह लोकतंत्र के लिए सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है।

भारतीय संविधान धर्म एवं राजनीति के संबंध को नियंत्रित करने के लिए कई प्रावधान प्रदान करता है। अनुच्छेद 25 से 28 धार्मिक स्वतंत्रता सुनिश्चित करते हैं, जबकि अनुच्छेद 14 और 15 समानता और गैर-भेदभाव का अधिकार देते हैं। संविधान यह स्पष्ट करता है कि राज्य किसी धर्म को विशेष मान्यता नहीं देगा और न ही किसी के धार्मिक अधिकारों का हनन करेगा। इसके साथ ही यह नागरिकों पर नैतिक दायित्व भी डालता है कि वे विभिन्न धर्मों के प्रति सम्मान रखें। इस प्रकार संविधान धर्म और राजनीति के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए एक मजबूत ढांचा प्रदान करता है।

धार्मिक नेता समाज में बड़ा प्रभाव रखते हैं और अक्सर राजनीतिक मुद्दों पर भी उनकी आवाज महत्वपूर्ण होती है। कई बार धार्मिक नेता सामाजिक सुधार को बढ़ावा देते हैं, जैसे जातीय भेदभाव, हिंसा या शोषण के खिलाफ आवाज उठाना। लेकिन कभी-कभी धार्मिक नेता अपने प्रभाव का उपयोग राजनीतिक लाभ के लिए भी करते हैं, जिससे समाज में पक्षपात, विभाजन और टकराव पैदा हो सकता है। उनकी भूमिका सकारात्मक भी हो सकती है और नकारात्मक भी। इसलिए धार्मिक नेतृत्व और राजनीति के बीच संतुलन आवश्यक है, ताकि समाज में सामाजिक सद्भाव और न्याय कायम रहे।

लोकतांत्रिक समाजों में धर्म नागरिकों के मतदान व्यवहार, राजनीतिक रुचियों और सामाजिक दृष्टिकोण को प्रभावित करता है। लोग अक्सर अपने धार्मिक मूल्यों और पहचान के आधार पर राजनीतिक निर्णय लेते हैं। राजनीतिक दल भी इसे समझते हैं और धार्मिक प्रतीकों, विचारों और त्योहारों को अपने अभियान का हिस्सा बनाते हैं। कभी-कभी धर्म सामाजिक मुद्दों जैसे महिला अधिकार, शिक्षा, न्याय और नैतिकता पर राजनीतिक बहस को भी प्रभावित करता है। इसलिए धर्म का लोकतांत्रिक राजनीति पर गहरा सामाजिक-मानसिक प्रभाव होता है।

दुनिया के विभिन्न देशों में धर्म और राजनीति के बीच संबंधों की प्रकृति भिन्न है। अमेरिका में चर्च और राज्य अलग होने के बावजूद धार्मिक समूह चुनावों को प्रभावित करते हैं। यूरोप में धर्मनिरपेक्षता अधिक कड़ी है और राजनीति पर धर्म का प्रभाव सीमित है। वहीं मध्य-पूर्व के कई देशों में धार्मिक कानून ही शासन का आधार हैं। इन वैश्विक उदाहरणों से यह समझ आता है कि धर्म और राजनीति का संबंध हर समाज की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि के अनुसार बदलता है। इसके मुकाबले भारत का मॉडल संतुलन पर आधारित है।

धर्म और राजनीति के संबंध को स्वस्थ बनाए रखने के लिए कई उपाय आवश्यक हैं। राजनीतिक दलों द्वारा धार्मिक भावनाओं के दुरुपयोग को रोकने के लिए कड़े कानून बनाए जाने चाहिए। चुनाव आयोग को धार्मिक आधार पर प्रचार पर सख्त निगरानी रखनी चाहिए। समाज में धार्मिक सद्भाव और साम्प्रदायिक एकता पर आधारित शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए। सोशल मीडिया पर गलत सूचनाओं और नफरत फैलाने वाली सामग्री पर कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए। साथ ही धार्मिक नेताओं और राजनीतिक नेताओं में नैतिकता और जिम्मेदारी की भावना विकसित करना आवश्यक है। इन उपायों से धर्म और राजनीति के बीच संतुलन स्थापित हो सकता है और लोकतांत्रिक व्यवस्था मजबूत बन सकती है।

V. निष्कर्ष

धर्म और राजनीति का संबंध अत्यंत जटिल और बहुआयामी है। जहाँ एक ओर धर्म समाज में नैतिकता, मूल्य, अनुशासन और सामूहिक पहचान का आधार बनता है, वहीं राजनीति शासन, नीतियों और सत्ता-वितरण की प्रक्रिया को संचालित करती है। दोनों की परस्पर क्रिया सामाजिक जीवन को प्रभावित करती है। यदि धर्म राजनीति को नैतिक दिशा प्रदान करता है, तो राजनीति भी धार्मिक संस्थाओं और समुदायों को प्रभावित करती है।

भारत जैसे विविधतापूर्ण राष्ट्र में यह संबंध और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि यहाँ अलग-अलग धर्मों और समुदायों की सांस्कृतिक परंपराएँ समाज की संरचना को गहराई से प्रभावित करती हैं। इस संदर्भ में धर्मनिरपेक्षता की नीति अत्यंत आवश्यक है, ताकि राज्य सभी धर्मों के प्रति समान दृष्टि रख सके और किसी प्रकार का राजनीतिक पक्षपात या धार्मिक भेदभाव न हो।

हालाँकि, धर्म का राजनीतिकरण सामाजिक तनाव, सांप्रदायिकता और विभाजन को जन्म दे सकता है—इसलिए यह अनिवार्य है कि राजनीति में धार्मिक भावनाओं का उपयोग जिम्मेदारी और संवेदनशीलता के साथ किया जाए। समाज के नेताओं, नागरिकों और संस्थाओं को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि धर्म का उपयोग लोगों को बाँटने के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक सद्भाव, नैतिक मूल्यों और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के लिए किया जाए।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 1.982| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 2, Issue 4, July-August 2015 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2015.0204018

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि धर्म और राजनीति का संबंध न तो पूर्णतः अलग किया जा सकता है और न ही दोनों का अत्यधिक मिश्रण लोकतांत्रिक समाज के लिए हितकारी है। संतुलन, संवैधानिक मूल्यों का पालन और सामाजिक सद्भाव—इन तीनों के आधार पर ही एक स्वस्थ एवं स्थिर लोकतांत्रिक व्यवस्था विकसित हो सकती है।

संदर्भ

1. संग्रहित रचनायें, खण्ड 19, पृ. 85, लेनिन।
2 संग्रहित रचनायें, खण्ड 39, पृ. 499, लेनिन।
3. 'विश्वकोषकार, फायरबारव, ले. लेनिन, संग्रहित रचनायें, खण्ड 15, पृ. 410।
4. 'मेरी कहानी', लेखक जवाहरलाल नेहरू, अंग्रजी संस्करण, लंदन, पृ. 383।
5. 'आत्मकथा' (सत्य के प्रयोग), अहमदाबाद, 1966, पृ. 383।
6. 'महात्मा' ले. डी. जी. तेदुलकर खण्ड 6, पृ. 48, बम्बई, 1951-54।
7. न्यू टाइम्स आफ वर्मा, 18, 10, 1956, पृ. 41
8. लेनिन संगृहीत रचनाएं, खण्ड 20, पृ. 492।
9. पोलिटिकल अफेयर्स, अगस्त 1968, पृ. 20 पर उद्धृत 'सोशलिज्म एण्ड रिलिजन' नामक पुस्तक की पंक्तियाँ।
10. मार्क्स एण्ड गेल्स रिलीजन पृ. 42।